DATE : / /

PAGE NO. :

अहिंसा का प्रभाव

भारत मे कई ऐसे विचारक एवं सुधारकर्ता हुए जिन्होने अहिंसा वादी विचारधारा का प्रचार प्रसार किया जिनमे राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द जैसे नाम विश्वप्रसिद्ध है।

प्राचीन काल से महात्मा बुद्ध को अहिंसा का सबसे बड़ा प्रणेता माना जाता है,

अहिंसा के प्रभाव मे आकर अंगुलिमार जैसे डाकु का मन परिवर्तन हो गया था

आज के युवा को समझना चाहिए कि हिंसा को त्यागना ही इस जीवन मे सुखी और समृद्ध बना सकता है।

उपसंहार

युवा को समझना चाहिए की हिंसा को त्यागकर मनुष्य महान बन सकता है। प्रत्येक कार्य हिंसा के द्वारा नही होता है। अतः हिंसा को न अपनाकर युवाओ को अहिंसा का स्वागत करना चाहिए.

Scanned with CamScanner

राजकीय महाविद्यालय देवली (टोंक)

निबन्ध :- युवा एवं अहिंसा

DATE : / /

PAGE NO. :

नाम - दिव्यांश शर्मा कक्षा - BA I

प्रस्तावना

अहिंसा व युवा दो विरोधाभासी शब्द है। युवा जोश का प्रतीक है वह उत्साह का प्रतीक है कुछ कर गुजरने की अवस्था होती है। हिंसा के मायाजाल मे उलझकर युवा अपने जीवन को गलत मार्ग पर ले जा सकते है। अत: युवाओ मे अहिंसा का संचार आवश्यक है।

हिंसा पर नियन्त्रण :- हिंसा पर भी नियन्त्रण रखा जा सकता है बशर्ते अगर युवा अपने मन को नियन्त्रण मे रखे।
अपने क्रोध पर नियन्त्रण स्थापित किया जाए। अगर युवा बात-बात पर हिंसा करने की बजाय अपने जोश और उत्साह तथा गर्मजोशी को सकारात्मक कार्यो मे लगाएं तो वह न केवल समाज के हित का कार्य करेगा बल्कि स्वयं के हित का कार्य भी करेगा।

युवा व अहिंसा :- यह आवश्यक नही सारे युवा हिंसक ही होते हैं। किसी भी तरह की हिंसा किसी भी दृष्टि से उचित नही होती। अक्सर देखने